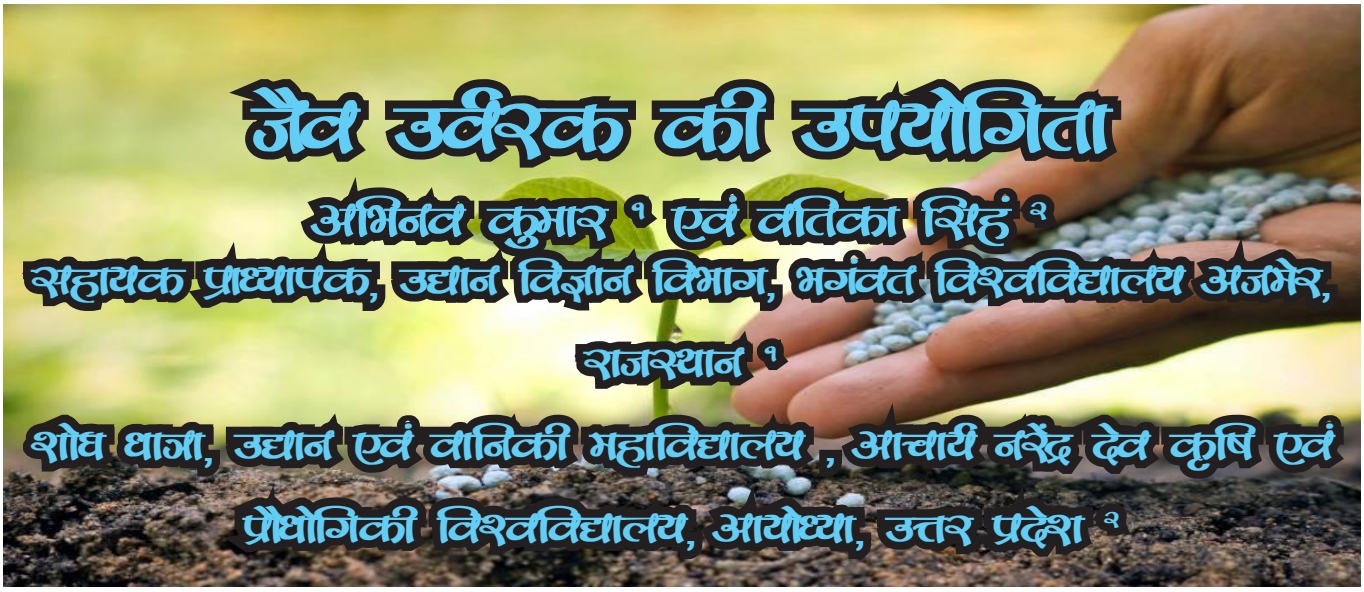

जैव उर्वरक की उपयोगिता

अभिनव कुमार [१] एवं वतिका सिंह [२]
सहायक प्राध्यापक, उद्यान विज्ञान विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान [१]
शोध धात्री, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय , आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश [२]

भारत का एक बड़ा भाग कृषि पर निर्भर करता है। मनुष्य को जीवन यापन के लिए भोजन की आवश्यकता होती है जो कि मनुष्य को भोजन अन्न के रूप में प्राप्त होता है भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है और अन्न की पूर्ति के लिए 60 के दशक से प्रयाश किया जा रहा है इसी के फलस्वरूप देश में हरित क्रान्ति लाई गई और अधिक अन्न उत्पादन के लिए "अन्न उपजाओं" का नारा दिया गया।

हमारे देश में वर्त्तमान में अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक उर्वरको का अंधाधुंध व अनियंत्रित प्रयोग किया जा रहा है। इससे हमारे उत्पादन वृद्धि पर असर पड़ने लगा है। रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के अंधाधुंध व असंतुलित प्रयोग के कारण मृदा स्वास्थ्य और मृदा में उपलब्ध लाभदायक जीवाणुओं की संख्या में लगातार भारी कमी हो रहा है। भूमि की उपजाऊ शक्ति में तो कमी आ रही है साथ ही उसके अन्य दुष्प्रभाव जैसे मृदा, जल एवं पर्यावरण सम्बन्धी प्रदूषण भी सामने आने लगी हैं। रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के अत्याधिक और दीर्घकालिक प्रयोग से हमारी मृदा मृतप्राय हो गई है अतः आज खेती की ऐसी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है जिससे उत्पादन मे कभी भी न हो और मृदा की सजीवता एवं उर्वरता भी बनी रहे।

खेतों में हमें उपलब्ध जैविक साधनों की मदद से खाद, कीटनाशक दवाई, चूहा नियंत्रण हेतु दवा वगैरह बनाकर उनका उपयोग करना चाहिए।

प्रकृति के सूक्ष्म जीवों एवं अन्य जीवों का तंत्र हमारी खेती में सहयोगी का कार्य करते हैं। इन तरीकों के उपयोग से हमें पैदावार भी अधिक मिलेगी एवं अनाज, फल, सब्जियाँ भी विषमुक्त एवं उत्तम हों जाएगी। मृदा को स्वस्थ बनाए रखनें, लक्षित उत्पादन प्राप्त करने उत्पादन लागत कम करने हेतु व पर्यावरण और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि रसायनिक उर्वरकों जैसे कीमती निवेश के प्रयोग को एक हद तक कम करके जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए अतः जैविक खेती जीवो के सहयोग से की जाने वाली खेती के तरीके को कहते हैं ।

जैविक खेती क्या है ?

जैविक खेती एक ऐसी पद्धति है , जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा खरपतवारनाशियों के स्थान पर जीवांश खाद, पोषक तत्वों जैसे गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, जीवाणु कल्चर, जैविक खाद आदि का उपयोग किया जाता है , जिससे न केवल भूमि की उर्वरा शक्ति लम्बे समय तक बनी रहती है, बल्कि पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता तथा कृषि लागत घटने व उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ने से

कृषक को अधिक लाभ भी मिलता है । जैविक खेती एक सदाबहार कृषि पद्धति है, जो पर्यावरण की शुद्धता, जल एवं वायु की शुद्धता, भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाने वाली, जल धारण क्षमता बढ़ाने वाली हैं । जैविक खेती रसायनों का उपयोग आवश्यकता अनुसार कम से कम करते हुए कृषक को कम लागत से दीर्घकालीन स्थिर व अच्छी गुणवत्ता वाली उपज प्रदान करती है ।

जैविक खेती के सिद्धान्तः

- मिट्टी , पौधे और जीव प्रकृति की धरोहर है।
- प्रत्येक जीव के लिए मृदा ही जीवन का स्रोत है।
- हमें मृदा को पोषण देना है , न कि पौधे को जिसे हम उगाना चाहते है।
- ऊर्जा प्राप्त करने वाली लागत में पूर्ण स्वतंत्रता।

जैविक खेती का उद्देश्य :

इस प्रकार की खेती करने का मुख्य उदेश्य यह है कि रासायनिक उर्वरकों का उपयोग न हो तथा इसके स्थान पर जैविक उत्पाद का उपयोग अधिक से अधिक हो लेकिन वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए उत्पादन में तत्काल कमी किया जाना सम्भव नही है । अतः रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को वर्ष प्रति वर्ष विभिन्न चरणों में कम करते हुए जैविक उत्पादों को ही प्रोत्साहित करना है । जैविक खेती का प्रारूप निम्नलिखित प्रमुख क्रियाओं के क्रियान्वित करने से प्राप्त किया जा सकता है ।

1. कार्बनिक खादों का उपयोग ।
2. जैव उर्वरको का प्रयोग ।
3. फसल अवशेषों का उचित उपयोग ।
4. जैविक तरीकों द्वारा कीट व रोग नियंत्रण
5. फसल चक्र में दलहनी फसलों को अपनाना।
6. मृदा संरक्षण क्रियाएं अपनाना

जैविक खेती के फायदेः

1. भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है ।
2. जमीन में जैवांश की मात्रा बढ़ जाती है ।
3. मृदा का पी . एच . ठीक हो जाता है ।
4. प्रदूषण मुक्त खेती होती है ।
5. इस प्रकार की खेती में कम पानी की आवश्यकता होती है ।
6. पशुओं का अधिक महत्व होता है ।
7. फसल अवशेषों को खपाने की समस्या नहीं होती है ।
8. अच्छी गुणवत्ता की पैदावार होती है ।
9. जीवों की सुरक्षा एवं संख्या में बढ़ोत्तरी होती है ।
10. रासायनिक खाद के मुकाबले अनेक पोषक तत्वों का अधिक होते है जैविक खादों में ।
11. मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है
12. कम लागत लगती है ।
13. अधिक लाभ मिलता है ।
14. उपज का मूल्य ज्यादा मिलता है ।
15. स्वास्थ्यवर्द्धक और स्वादिष्ट अनाज की उतपति होती है।